Krishna Nand B.A I Hons (1)

से कुछ और नहीं मिल पाता है। इसका परिणाम यह होता बच्चे में संवेगात्मक आघातपूर्ण अनुभव उत्पन्न होता है। इस से Brown (1940) ने लिखा भी है कि — "The combination of the final weaning the beginings of training of habits of personal cleanliness and the possible appearence of the new child represents the second major traumatic."

इस तरह संवेगात्मक अनुभव के फलस्वरूप बच्चे में ईर्ष्या का विकास शुरू हो जाता है और वह स्वीकार करने लगता है कि वह अपने परिवार में प्रेम माता-पिता का केन्द्र नहीं है।

Freud के इस अवस्था का प्रभाव प्रौढ़ावस्था या व्यक्तित्व विकास पर काफी अधिक पड़ता है। इस अवस्था पर स्थिरीकरण हो जाने पर व्यक्ति मिलनसारी, वाचिक और कटु व्यवहार वाला हो जाता है वह मीठा-बोल एवं अन्य प्रकार के परपीड़न कार्यों में अधिक रुचि होता है।

2 Anal stage — Infantile sexuality का दूसरा स्तर Anal stage है जो 8 माह से लेकर 4 वर्ष तक की आयु के बीच होती है। इस अवस्था में कामुकता का क्षेत्र मुँह से हटकर शरीर के Anal region में आ जाता है। फलस्वरूप बच्चे मलमूत्र त्यागने संबंधी क्रियाओं से आनंद उठाते हैं। इस अवस्था को मुख्य दो भागों में बाँटा गया है, जो निम्नांकित है —

(1) Anal expulsive stage — गुदा निष्कासन अवस्था में बच्चे मलमूत्र त्यागने में लैंगिक सुख प्राप्त करता है क्योंकि ऐसा करने से उसका शारीरिक तनाव दूर हो जाता है और उसे आनंद मिलता है। इसके अलावा माता पिता द्वारा उचित स्थान एवं सही समय पर नियमित रूप से मलमूत्र त्यागने एवं सफाई की आदतें सिखाई जाती हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान माता पिता द्वारा अपनाई गई मनोवृत्ति एवं विधियों का प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व पर पड़ता है। कभी-कभी बच्चे में यह भी देखा जाता है कि जहाँ पर मलमूत्र त्यागने के लिए मना किया जाता है वहीं पर वह क्रिया करके अपनी आक्रामकता की अभिव्यक्ति करता है। इसका ऐसे बच्चों में एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व का विकास होता है जिसे Anal aggressive personality कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व में क्रूरता, विध्वंसात्मकता, विद्वेष आदि शीलगुणों की प्रधानता होती है।

(2) Anal retentive stage — इस अवस्था में मलमूत्र को कुछ देर तक रोके रखने में बच्चे को आनंद का अनुभव होता है

Krishna Nand B.A I Hon's (1)

मलमूत्र को रोककर रखने से बच्चे के मलत्याग एवं अंत में अवरुद्ध सा तनाव उत्पन्न होता है जिससे उसे लैंगिक आनन्द मिलता है, लेकिन इस तनाव से वह अधिक देर तक आनन्द की अनुभूति नहीं कर सकता है क्योंकि उसे इसका त्याग करना ही पड़ता है। फलस्वरूप बच्चे में निराशा उत्पन्न होती है, जो बाद में चलकर उसके व्यक्तित्व शीलगुणों के निर्माण में महत्वपूर्ण साबित होती है। Freud के अनुसार यदि माता-पिता द्वारा मलमूत्र त्यागने की प्रशिक्षण देने में कठोरता बरतने से ऐसे शिशुओं में वयस्क होने पर Anal relative Personality का विकास होता है। ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व दृढ़, कंजूस, हठवादिता, समय-निष्ठा इत्यादि गुणों का विकास होता है। इस स्थिति की दमित एवं कुंठित कामुक असंतुष्टि की अभिव्यक्ति गुदा परपीड़न कामुकता के रूप में देखने को मिलती है। गुदा अवस्था में बच्चे के यौन संतुष्टि में डाली गई अनावश्यक बाधा को बच्चे में अनेक महत्वपूर्ण मानसिक रोगों के लक्षण उत्पन्न कर सकती है जिसमें Paranoia, compulsive neurosis, character disorder, Homosexuality इत्यादि की विकृति भी उत्पन्न हो सकती है। उदात्तीकरण के मानसिक मनोरचना के द्वारा आगे चलकर बच्चा मूर्तिकार, पेन्टर, इत्यादि कुछ भी बन सकता है। गुदावस्था की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इस अवस्था की समाप्ति तक बच्चे में अहं का विकास काफी हो जाता है और बच्चे का व्यवहार सुख व्यवहार के साथ-साथ वास्तविकता के सिद्धांत द्वारा नियंत्रित होता है।

3. Phallic Stage — मनोलैंगिक विकास की यह अवस्था मुख्य रूप से तीन वर्ष से पांच वर्ष तक की अवस्था है। इससे पहले वाली अवस्था में ही बच्चों में लिंग भिन्नता का ज्ञान हो जाता है। इस अवस्था में कामु क्षेत्र का विकास जननेन्द्रिय में होता है। बच्चे लिंग भेद से परिचित होने के कारण भाई-बहन माता पिता को नंगा देखने का अवसर ढूंढता रहता है और कभी-कभी बच्चे माता-पिता को लैंगिक संभोग में संलग्न देखने का मौका ढूंढ लेता है। इस अवस्था में बच्चे अपने जननेन्द्रिय को छूकर, सहलाकर या म के द्वारा सुख प्राप्त करते हैं और बाद इस प्रकार का आनंद अपनी ही जननेन्द्रियों से प्राप्त नहीं करते साथी लड़के-लड़कियों की जननेन्द्रियों को छूकर या स करते हैं। Freud का कहना है कि — इस अवस्था लड़के में मातृ-प्रेम मनोग्रंथि (Oedipus complex)